M.A – II SEMESTER CC-4 01

शौरसेनी आगम साहित्य का इतिहास 56

इकाई -(2) शौरसेनी टीका साहित्य

Q(1) शौरसेनी टीका साहित्य में यतिवृषभ और उनका साहित्य का संक्षेप में प्रस्तुत करें।

Ans. शौरसेनी में करणानुयोग सम्बन्धी साहित्य निर्माताओं में आचार्य यतिवृषभ का महत्वपूर्ण स्थान है। इन्द्रनन्दि ने अपने श्रुतावतार में कषाय प्राभृत नामक द्वितीय श्रुतस्कन्ध के चूर्णि सूत्रों का इन्हें कर्ता बताया है।

लिखा है कि गुणधर आचार्य ने कषाय प्राभृत का जिन नागार्य नागहस्ति और आर्यमंक्षु मुनियों के लिए व्याख्यान किया था उन दोनों के पास यतिवृषभ नामक श्रेष्ठ यति ने उसे पढ़ा और उस पर छह हजार श्लोक परिमाण चूर्णि सूत्र रचे। जयधवला टीका में सो वित्ति सुत्तकत्ता जइवसहो मे वरं देउ" कहकर इन्हें आर्यमंक्षु और नागहस्ति का शिष्य कहा है।

यतिवृषभ का समय श्री प० नाथूराम प्रेमी ने अनेक प्रमाणों के आधार पर शाक संवत 395 माना है और तिलोयपण्णत्ति का रचनाकाल शक संवत 405 (वि०सं०) 540 लगभग माना है। श्री प० जुगलकिशोर मुख्तार ने यतिवृषभ और कुन्दकुन्द के समय की आलोचना करते हुए कुन्दकुन्द को यतिवृषभ से पूर्ववर्ती सिद्ध किया है।

यतिवृषभ की रचना में चूर्णि सूत्रों के अतिरिक्त तिलोयपण्णत्ति नामक ग्रन्थ उपलब्ध है। इस ग्रन्थ में आठ हजार (8000) श्लोक की रचना किया गया है।

तिलोयपण्णत्ति में तीन लोक के स्वरूप

- आकार, प्रकार, विस्तार, और क्षेत्रफल युगपरिवर्तन विषय का निरूपण किया है। प्रसंगवश जैन सिद्धान्त, पुराण और भारतीय इतिहास विषय सामग्री भी निरूपण है यह ग्रन्थ नौ महा-अधिकार में विभक्त है।

(1) सामान्य जगत्स्वरूप (2) नारकलोक (3) भवनवासिलोक (4) मनुष्य लोक (5) व्यन्तरलोक (6) ज्योतिर्लोक (7) सुरलोक (8) सिद्धलोक ( ).

प्रथम महाधिकार में 283 गाथाएँ है और तीन गद्य भाग है। इस अधिकार में अठारह प्रकार की महाभाषाएँ और सातसौ प्रकार की क्षुद्र भाषाएँ उल्लिखित है राजगृह के विपुल-ऋषि-शैल वैभार छिन्न और पाण्डु नाम के पाँच शैलो का उल्लेख है।

दूसरा महाधिकार - में 367 गाथाएँ है जिन मे नरक लोक के स्वरूप का वर्णन है। तीसरे महाधिकार - 243 गाथाएँ है। इसमे भवनवासी देवो के प्रासादों मे जन्मशाला, अभिषेकशाला, भूषणशाला मैथुनशाला, ओलगशाला- परिचर्या गृह और मन्त्रशाला आदि।

- चतुर्थ महाधिकार - मे 2961 गाथाएँ है। इसमे मनुष्य लोक का वर्णन करते हुए विजयार्ध के उत्तर और दक्षिण अवस्थित नगरियो का उल्लेख है। आठ मंगलद्रव्यो मे भृंगार कलश, दर्पण, व्यजन ध्वजा, छत्र, चमर और सुप्रतिष्ठ के नाम आये है। भोगभूमि मे स्थित दस कल्पवृक्ष, नर - नारियो के आभूषण, तीर्थंकरो की जन्मभूमि, नक्षत्र आदि का निर्देश किया गया है। बताया गया है कि नेमि, मल्लि, महावीर, वासुपूज्य और पार्श्वनाथ कुमारवस्था मे और शेष तीर्थंकर राज्य के अन्त मे दीक्षित हुए है।

पाँचवा महाधिकार - मे 321 गाथाएँ है, इसमें गद्यभाग भी है। इसमें जम्बूदीप लवणसमुद्र

धात कीखण्ड, कालोदसमुद्र, पुष्कर द्वीप आदि का वित्ता हुआ है

छठवे महाधिकार - मे 103 गाथाऐं है, जिनमे 17 अन्तराधिकार द्वारा व्यन्त देवों के निवास क्षेत्र उनके भेद, चिन्ह उत्सेध, ~~अवधिकार~~ अवधिज्ञान आदि।

सातवें महाधिकार - मे 619 गाथाऐं है, जिनमे ज्योतिषी देवो को वर्णन है। आठवे महाधिकार मे - 703 गाथाऐं है। जिनमे वैमानिक देवो का का विस्तार कथन है। नौवे महाधिकार मे सिद्धो के ~~के~~ क्षेत्र उनकी संख्या अवगाहना और सुख का प्ररूपण है।

गाथा -

अन्धो णिवडइ कुवे बहिरोण सुणेदि साधु उवदेसं।
पेच्छंतो णिसुणंतो णिरए जं पडइ तं चोज्जं

अर्थात् - अन्धा कुप मे गिर जाता है और बहरा साधु का उपदेश नही सुनता है यह आश्चर्य की बात नही है। आश्चर्य इस बात का है कि जीव देखता और सुनता हुआ नरक मे जा पडता है।

यह यतिवृषभ का ग्रन्थ के टीका है। जो मनुष्य जानकर भी गलत कर्म कर अपने जीवन को ~~नरक~~ नरक मे जाकर कष्ट प्राप्त कर लेता है।